International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 6 No. 40 September - October - 2025

'जंगल जहाँ से शुरु होता है' उपन्यास में आदिवासी समाज जीवन

प्रो.डॉ. बाबासाहेब कोकाटे
हिंदी विभागाध्यक्षा, बलभीम महाविद्यालय, बीड
Corresponding Author – प्रो.डॉ. बाबासाहेब कोकाटे
DOI - 10.5281/zenodo.17656849

प्रस्तावना:

'जंगल जहाँ से शुरु होता है' यह उपन्यास संजीव का लोकप्रिय उपन्यास है। इस उपन्यास का प्रकाशन इ.स.२००० में हुआ है। संजीव साँतवे-आठवे दशक के ऐसे उपन्यासकार है, जिन्होंने अपनी अलग पहचान बनाई है। वे विचारों से प्रगतिवादी-जनवादी है। इसलिए उनकी दृष्टि उपेक्षित, शोषित और पीड़ित सर्वहारा वर्ग के लोगों पर केंद्रित रहती है, जो समाज में बहुसंख्यक होते हुए भी निरंतर पीछे है ऐसे पीछे जिन्हें पूछने वाला कोई नही है। स्वाधीन भारत में निरंतर लूटे गए है, सताए गए है और उन्हें षडयंत्रपूर्वक पीछे धकेला गया है। राजनीति इन लोगों के लिए धोखे की घटना है, धर्म मूर्ख बनाकर लुटने का साधन तथा समाज साधन संपन्न लागों का गिरोह। संजीव के लिए ऐसे लोग और उनका समाज त्याज्य नहीं है चरन वरेण्य है। वे उन लोगों के साथ जुड़े-खड़े रहते हैं. उनके सुख, दुःख में बराबर की भागीदारी निभाते है और उनकी अभिव्यक्ति के लिए कहानी और उपन्यास लिखते हैं।

आदिवासीयों की अपनी एक संस्कृति है, साथ ही उनकी जीवन जीने को एक खास समाजरचना है। जो उन्हें बांधे रखती है। आदिवासियों का अर्थतंत्र नैसर्गिक साधन-सम्पत्ति पर निर्भर है। इसी साधन-सम्पत्ति पर आदिवासी अपना उदरनिर्वाह करते है । जंगल तोड, विस्थापन के कारण आदिवासियों की नैसर्गिक साधन-सम्पत्ति नष्ट हुई। आदिवासी क्षेत्र में बहुत कोयला खानों का निर्माण किया गया। साधनहीन आदिवासी लोग इन खानों में मेहनत मजदूरी करते रहें, लेकिन उनके श्रम के बदले में उन्हें बहुत कम मजदूरी दी जाती थी। साथ ही साथ उनका शोषण होता था । वैश्वीकरण के कारण खानों का यांत्रिकरण हुआ जिससे उन पर बेकार रहने की नौबत आयी। आर्थिक अभाव महंगाई, भूखमरी से पीड़ित आदिवासी जीवननिर्वाह के लिए शहरों की ओर जाने लगे।

'जंगल जहाँ से शुरु होता है' के परिदृश्य पर उपन्यास का परिचय देते हुए लिखा गया है कि पिछले कुछ वर्षों में हिन्दी लेखकों ने बहुधा अनछुए, परित्यक्त और वर्जित क्षेत्रों की यात्राएँ की है, जनजातियों, कोयला खदान, समुद्र, अन्तरिक्ष, तकनॉलोजी और वे तमाम क्षेत्र जहाँ जिन्दगी सांस लेती है। नये साज और नये अन्दाज से नये-नये

दिगन्तोंकी अर्गलाएँ खोलने के इसी क्रम में इस बार प्रस्तुत है हिन्दी के ख्यातनाम कथाकार संजीव का ताजा उपन्यास 'जंगल जहाँ से शुरु होता है'। जंगल यहाँ अपने विविध रुपों और अर्थों छवियों के साथ नये अन्दाज में खिलता और फुलता नजर आता है। इस उपन्यास में संजीव ने 'थारु' जनजाति, सामान्य जन,

डाकू, पुलिस, प्रशासन, राजनीति, धर्म, समाज और व्यक्ति और सब के पीछे से, सबके अन्दर से झाँकता, झहराता जंगल है। उपन्यास के केंद्र में है मीनी चम्बल के नाम से जाने - जानेवाला पश्चिमी चम्पारण जहाँ अपराध पहाड़ की तरह नंगा खड़ा है जंगल की तरह फैला हुआ है। नदियों की तरह दूर-दूर तक फैल रहा है। जनजातियों और जंगली जीवों के बिंदू से शुरु होकर यह जंगल फैलता ही चला गया है। पटना, दिल्ली, लखनऊ, नेपाल और देशदेशान्तर तक संजीव जी के बारह वर्षों के निरंतर श्रमसाध्य शोध से जो अरण्य-गाथा पेश की है, वह सर्वथा सत्य और नई है। जितनी मनोरम, उतनी ही भयावह और जुगुत्साकारी भी है। जंगल में रहने वाले आदिवासी लोगों की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक स्थिति का चित्र प्रस्तुत किया हैं।

जमीन से जुडी त्रासदी :

संजीव ने पश्चिम चंपारण के बेतिया अंचल की 'थारु' जनजाति के दुःख हर्द को इस उपन्यास में प्रस्तुत किया है। इस अंचल की दस प्रतिशत भूमि पर एक प्रतिशत उच्चवर्ग के लोगों का कब्जा है और पाँच प्रतिशत भूमि पर निर्धन आदिवासियों का। इसका सीधा-सीधा अर्थ यह हुआ कि जमीन पर कुछ उच्चवर्ग के लोगों ने कब्जा कर रखा है, और यह आदिवासी लोग या तो इन लोगों की कृपा पर जीवित रहते है, या फिर जंगल की साधन-संपत्ति पर अपना जीवन यापन करते है। गरीबी, बेरोजगारी, शोषण, भूखमरी के कारण यह शोषित, पीड़ित लोग चोरी, डकैती करने के लिए विवश होते है। उच्चवर्ग के शोषण के शिकार यह लोग 'जंगल जहाँ से शुरु होता है' उपन्यास के चरित्र बने है। यही वह आदिवासी वर्ग के लोग है, जिनका चित्रण संजीव ने अपने उपन्यास जंगल जहाँ से शुरु होता है में किया है। इस उपन्यास में अभिव्यक्त होनेवाला आदिवासी समाज सामाजिक -आर्थिक शोषण का शिकार है। जिसका चित्रण संजीव ने अपने उपन्यास में चित्रबद्ध किया है।

समाज में मुख्य रुप से दो वर्ग है। एक प्रभुत्वशाली वर्ग और दूसरा आदिवासी वर्ग । ये उच्चवर्ग के लोग आदिवासी वर्ग के लोगों आर्थिक और शारीरिक शोषण करते हैं। इस उपन्यास में उच्चवर्ग का प्रतिनिधित्व करनेवाले पात्र है- मंत्री दुबेजी, पुतन यादव, कुमार, शर्मा, ठेकेदार, जमींदार आदि है, तो आदिवासी वर्ग का प्रतिनिधित्व करनेवाले पात्र है- काली बिसराम, दुलारी, मलारी, परशुराम, बन्सी, जोगी, श्यामदेव, नोमिया, फेकन आदि है।

संघर्ष और अस्मिता :

संजीव का उपन्यास 'जंगल जहाँ से शुरु होता है' हिंदी साहित्य में आदिवासी जीवन उनके संघर्ष और अस्मिता को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करता है। इस कृति में आदिवासी समाज केवल हशिये पर राहनेवाला समाज नाहीं है, बल्कि वह अपने जल, जंगल और जमीन से गहरी सांस्कृतिक चेतना और जीवन दर्शन को सामने लाता है। उपन्यास का मुख्य केंद्र भले ही मीनी चम्बल चंपारण रहा है लेकिन इसका केंद्रिय पात्र काली है। जिसके माध्यम से उपन्यास की कथा पूर्ण बनती है। 'जंगल जहाँ से शुरु होता है' उपन्यास में काली मुख्य रुप से आदिवासी समाज का प्रतिनिधित्व करनेवाला पात्र है। जिसके माध्यम से उपन्यासकार ने आदिवासी जनजाति के त्रासद जीवन को अभिव्यक्त किया है। काली शर्मिला, शिक्षित साहसी, धैर्यशील व्यक्ति है। काली धैर्यशील व्यक्ति होने के साथ - साथ एक मेहनती व्यक्ति भी है। जो हर जगह काम करता है, मिल में, नहर पर खेतों में, मालिकों के घरों में भी काम करता है। इब्राहिम ठेकेदार साहब को काली का परिचय देते

वक्त कहता है "ई काला है. खेत-खेतार गोरु, बछरु भीतर बाहर के लिए एक ही आदमी चाहिए था न? सुलेमान खाँ एक उडती सी नजर डालते है काली पर। काम बहुत कर पाएगा तो ? जी हाँ हुजूर बड़ा मेहनती है नहरियों पे काम भी करता था।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि काली एक मेहनती युवक है। उसमें श्रम करने की क्षमता है।

इस उपन्यास में सुलेमान खाँ के घर में काम करते समय काली को एक अनुभव आया । जब परशुराम ड़रा-धमकाकर इनसे पंद्रह हजार रुपये लेता है। न कोई श्रम न कोई मेहनत। इधर काली को दिन-रात मेहनत करके एक माह के बीस रुपये मिलते है। इसी बात पर काली कहता है "हक की कमाई माँगने पर ठेकेदार के पास पैसे नहीं है और हराम की कमाई डकारनेवाले दुरनाचारी लुटेरे परशुराम के लिए पंद्रह हजार आग धुल रही है काली के मन में। क्या वह इन हमरामखोरों की बेगारी करने और उनकी गाँड़ धोने के लिए ही पैदा है।"[2] इसी घटना से उसके मन में हलचल मच जाती है और वह डाकू बनने का मार्ग चयन करता है। इसके पीछे वह शोषण करनेवाली व्यवस्था है जो निरपराध लोगों को अपराधी बनाती है इसका उदाहरण काली है।

काली आदिवासी वर्ग की स्त्री पर होनेवाले बलात्कार का बदला बलात्कार से लेता है। उपन्यास में फेकन आदिवासी जाति का है, जिसके पत्नी पर पंडित और सुन्नर पांडे बलात्कार करते हैं. इसी अन्याय-अत्याचार का बदला काली और फेकन डाकू बनने पर लेते है।

काली फेकन से कहता है "कर लो इज्जत बराबर। काली के एक ही धक्के में फेकन इस नंगी औरत के उपर जा भहराया था।"[3] इस प्रकार काली आदिवासी वर्ग की स्त्रीयों पर कि गये बलात्कार का बदला बलात्कार से लेता है।

शोषण और उत्पीडन :

संजीव ने इस उपन्यास में सामान्य जनजातियों, आदिवासियों पर होनेवाले अन्याय करनेवाले लोग जमींदार, मालिक, साहुकार, नेता, पुलिस आदि। उनका शोषण करते हैं। इस उपन्यास में 'थारु' जनजातियों के लोगों की कहानी है। इस 'थारु' जनजाति में बिसराम का परिवार अपना जीवन बीता रहा है। उसके परिवार का चारों तरफ से शोषण होता रहा है। "ये धान के बीज डालने के दीन है। मगर कहाँ के बीज कहाँ का खेत? बीज होते तो भी क्या होता ? खेत तो बंधक पड़े है-मालिकों के यहाँ। सोचा था भैंस गर्भवती है इसे बेचकर जुगाड़ कर लेंगे कुछ काली के पैसे बकाए है, नहर के ठेकेदार के पास। मालिक से मुकदमा चल रहा है -"पुरे एक बीघ धनहार खेत कब्जिया लिए है उन्होंने।"[4] इस तरह से बिसराम के परिवार का सभी लोग शोषण कर रहे है। एक तरफ से मालिक ने कब्जा बना लिया है। भैंस बेचकर भी ठेकेदार पैसे नहीं देता। दूसरी तरफ से डाकू इनके परिवार का शोषण करते हैं।

इस उपन्यास में पुलिस जनता की रक्षक न होकर भक्षक बन गई है। पुलिस अफसर पुरुष पर ही नहीं तो आदिवासियों की स्त्रियों पर अत्याचार करते है। गाँव के अन्य लोग भी पुलिस आने पर गन्ने के खेतों में छिप जाते है। उपन्यास में कुमार एक ऑफिसर है जो डाकुओं की जाँच के लिए मलारी के घरजाता है। उसका गोरा देह देखकर उसकी काम भावना जागृत होती है और वह उसके साथ यौन सम्बन्ध रखता है। ये आदिवासी जाति की स्त्री लोगों को बतायेगी तो उसे ये पुलिस अफसर डाकुओं की सहायता के जुर्म में पकड़ कर ले जाएगा। मलारी बाद में कहती है "बस इसी के

लिए कुत्ते की तरह आए थे दबे पाँव, आपकी औरत तो इज्जदार है, ऊँची जात के बड़े लोग। हम गरीब लोग नीच जाति की औरतो की क्या इज्जत ? खुला दरवाजा है, जो चाह मुँह मारले।"[5] अंतः उपन्यास में एक पुलिस अफसर काम भावना की तृप्ति के लिए चोरों की तरह दबे पाँव गाँव में घुस जाता है। यह बर्ताव पुलिस का न होकर चोर का है। तो ये पुलिस कैसे हो सकता है ? उपन्यासकार संजीव कहते है कि यह पुलिस व्यवस्था जिस जन्मभूमि से जन्म लेते हैं। उसी माता या बहन पर बलात्कार करते हुए दिखाई देते हैं।

इस उपन्यास के माध्यम से पुलिस तथा प्रशासन व्यवस्था का फर्दाफाश संजीव ने किया हैं। उपन्यास में दिखाया गया है कि किस प्रकार ठेकेदार पून्जीपती और सरकारी तंत्र मिलकर आदिवासीयों को उनकी जमीन और जंगल के बेदखल कर देते है। शराब, कर्ज और भ्रस्टाचार के जाल में उन्हें फँसाया जाता है। इस कारण आदिवासी समाज अपनी मौलिक संस्कृती और स्वतंत्र जीवन शैली से दूर होता जाता।

निष्कर्ष :

'जंगल जहाँ से शुरु होता है' उपन्यास उन शोषित, पीड़ित आदिवासी जनजाति के करुणामय जीवन को अभिव्यक्त करता है। जो निरंतर इस शोषण के शिकार होते रहें है। जंगल बुराइयों एवं शोषण का प्रतिक है जिससे लढ़ाना बहुत जरुरी है। इस जंगल से संघर्ष किये बगैर आदिवासी वर्ग के लागों को पुरी तरह से आजादी नहीं मिल सकती। संजीव ने इस जंगल के कोने - कोने की -छानबीन करके उसके चरित्र को 'जंगल जहाँ से शुरु होता है' में रखा हे, बशर्त यह की इस जंगल के हर स्थान को समझना होगा। जिससे हमे एक नई चेतना मिले, यही इस उपन्यास की प्रस्तुती की माँग है।

संदर्भ :

१) वही - पृ. 167
२) जंगल जहाँ से शुरु होता है - संजीव पृ. 86
३) वही - पृ. 86
४) वही - पृ. 199
५) वही - पृ. 23